## राधेश्याम भारतीय


# तीन दिन


ई-मेल:rbhartiya74@gmail.com


"मैंने जो सुना क्या वह सच है?" मैंने अपने दूर के एक रिश्तेदार से फोन पर पूछा।

"आप घबराएं नहीं। सब ठीक होगा।" रिश्तेदार ने सहज भाव से कहा।

"कैसे ठीक होगा?" फूड इंस्पेक्टर ने सरेआम गेहूँ के बीच से रेत भरी बोरियां पकड़ी हैं। गेहूँ तो आपने बीच रास्ते ही बेच दिया।अखबार में साफ-साफ लिखा है।"

"तो क्या हुआ! क्या देश में यह पहला मामला है? आप तो...पता नहीं इतना क्यों घबराएं हैं।"

"सब ठीक होगा! पर कैसे?"

"वो टीम मुझे स्पष्टीकरण के लिए तीन दिन का समय देकर गई है। तीन दिन कम नहीं होते।कल तीसरा दिन है... पैसा का प्रबंध कर लिया है और साथ में गवाहों का भी।"

"गवाह! वो क्या करेंगे?"

"वे कर देंगे दूध का दूध और पानी का पानी।"

"क्या वे ऐसा करेंगे? सरेआम झूठ बोलेंगे? "

"क्यों नहीं बोलेंगे। पहले भी ऐसा होता रहा है।"

"क्या! इसका मतलब किसी को भी उसके अपराध की सजा नहीं मिलेगी?"

"सजा! ऐसे अधिकारी के होते हुए!" ऐसा कहते हुए उसने बेखौफ हो ठहाका लगाया और फोन बंद कर दिया।

---

## दीपक गिरकर

ई-मेल:deepakgirkar2016@gmail.com


# गुरु दक्षिणा

"शर्मा जी, आपको मालूम है क्या? हमारे पड़ोसी प्रोफेसर ने एक छात्रा, जो उनके मार्गदर्शन में पीएचडी कर रही थी, से पीएचडी पूर्ण होने पर आज गुरु दक्षिणा माँग ली।"

"लेकिन वह लड़की तो अनाथ है; और अनाथालय में ही रहती है। उसके पास गुरु दक्षिणा में देने के लिए उसकी देह के अलावा क्या होगा? तो क्या प्रोफ़ेसर ने...उस लड़की के साथ ...!"

"अरे मेरे भाई, प्रोफ़ेसर के पास पारखी नज़र है; और उन्होंने उस हीरे को पहचानकर उस लड़की को बहू बनाने का फैसला किया है।"